

Idgah

— Munshi Premchand

(1933)

हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
लेकिन, हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हम, हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।

हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।
हमारे देश में जो लोग गरीब हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।

[This is an excerpt of Premchand's classic short story 'Idgah' about a young boy
Hamid who buys a pair of tongs for his grandmother instead of toys for himself. Public
domain.]